IJARASEM

ISSN: 2395-7852

International Journal of Advanced Research in Arts, Science, Engineering & Management

Volume 12, Issue 1, January- February 2025

INTERNATIONAL STANDARD SERIAL NUMBER INDIA

Impact Factor: 7.583

+91 9940572462 +91 9940572462 ijarasem@gmail.com www.ijarasem.com

International Journal of Advanced Research in Arts, Science, Engineering & Management (IJARASEM)

| ISSN: 2395-7852 | www.ijarasem.com | Impact Factor: 7.583 | Bimonthly, Peer Reviewed & Referred Journal|

| Volume 12, Issue 1, January- February 2025 |

अल्बरूनी कालीन भारत की अर्थव्यवस्था का अध्ययन

मीनाक्षी
एम. फिल. विद्यार्थी
महर्षि दयानन्द विश्वविद्यालय, रोहतक (हरियाणा)

मध्यकालीन भारत, अपनी विविधता और समृद्धि के लिए जाना जाता था, एक ऐसा युग था जहाँ विभिन्न संस्कृतियाँ और सभ्यताएँ आपस में मिलीं और फली–फूलीं। इस दौर में भारत की अर्थव्यवस्था, अपनी जटिलताओं और विशिष्टताओं के साथ, विदेशी विद्वानों और यात्रियों का ध्यान आकर्षित करती रही। ऐसे ही एक विद्वान थे अलबरूनी, जो 11वीं शताब्दी में मध्य एशिया से भारत आए थे। उन्होंने अपनी उत्कृष्ट कृति "किताब–उल–हिन्द" में भारतीय समाज, संस्कृति और अर्थव्यवस्था का विस्तृत और गहन अध्ययन प्रस्तुत किया है। अलबरूनी की दृष्टि एक बाहरी प्रेक्षक की थी, जिससे उन्हें भारतीय अर्थव्यवस्था के विभिन्न पहलुओं का निष्पक्ष और तुलनात्मक विश्लेषण करने का अवसर मिला। अल्बरूनी के समकालीन ही विभिन्न देशों के कुछ अन्य विचारको के द्वारा किए गए अध्ययन भी इस संदर्भ में अतिमहत्त्वपूर्ण है। ये रचनाए भी उस काल में भारत की आर्थिक स्थिति का सटीक विश्लेषण प्रस्तुत करती है । प्रस्तुत यह शोध–पत्र 11वीं सदी के भारत की आर्थिक संरचना का विश्लेषण करता है, जैसा कि प्रसिद्ध फारसी विद्वान अल्बरूनी ने अपने ग्रंथ "किताब–उल–हिन्द" में एवं इस काल के अन्य महत्त्वपूर्ण विद्वानों ने अपनी रचनाओं में उल्लेखित किया है। प्रस्तुत शोध–पत्र में अल्बरूनी एवं उनके समकालीन विचारकों/लेखकों के आधार पर भारत की अर्थव्यवस्था का विश्लेषण करने का प्रयास किया गया है। जिसके अंतर्गत भारत की कृषि, शिल्प, व्यापार, मुद्रा प्रणाली और सामाजिक–आर्थिक संरचना का अध्ययन प्रस्तुत किया गया है।

मूल शब्द – मध्यकालीन भारत, भारतीय अर्थव्यवस्था, सामाजिक–आर्थिक संरचना, व्यापारिक संबंध

| ISSN: 2395-7852 | www.ijarasem.com | Impact Factor: 7.583 | Bimonthly, Peer Reviewed & Referred Journal|

| Volume 12, Issue 1, January- February 2025 |

प्रस्तावना :

भारत का मध्यकालीन इतिहास केवल राजनीतिक उथल–पुथल और सांस्कृतिक विकास तक सीमित नहीं था, बल्कि इस दौरान आर्थिक गतिविधियाँ भी महत्वपूर्ण रूप से प्रभावित हुईं। मध्यकालीन भारत, एक ऐसा दौर था जिसने विविध राजवंशों, धार्मिक आंदोलनों और सांस्कृतिक समृद्धि को देखा, साथ ही एक गतिशील और जटिल अर्थव्यवस्था का भी गवाह बना। यह वह समय था जिसके दौरान भारत ने आर्थिक उतार–चढ़ाव, तकनीकी प्रगति और वैश्विक व्यापार में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई। भारत की अर्थव्यवस्था प्राचीन काल से ही अपनी समृद्धि, व्यापारिक उन्नति और कृषि उत्पादन के लिए प्रसिद्ध रही है। 11वीं शताब्दी में भारत आए प्रसिद्ध फारसी विद्वान अल्बरूनी ने अपनी कृति "तहकीक–ए–हिंद" में भारत की आर्थिक संरचना, व्यापारिक गतिविधियों और सामाजिक व्यवस्था का विस्तृत वर्णन किया है। उनके अनुसार, भारत कृषि, उद्योग और वाणिज्य के क्षेत्रों में अत्यंत उन्नत था। अल्बरूनी के अलावा, उनके समकालीन अरब, फारसी और चीनी यात्रियों तथा इतिहासकारों जैसे अल–मसूदी, सुलेमान, इब्न हौकल, फाह्यान और ह्वेनसांग ने भी भारतीय अर्थव्यवस्था की प्रगति, व्यापारिक संबंधों और सामाजिक असमानताओं पर प्रकाश डाला। उनके अनुसार, भारत मसालों, वस्त्रों, धातु शिल्प और कीमती रत्नों के निर्यात में अग्रणी था तथा इसकी व्यापारिक पहुंच अरब, फारस, चीन और यूरोप तक फैली हुई थी। इन लेखकों ने भारतीय कर प्रणाली, मुद्रा प्रचलन, श्रम व्यवस्था और कृषि उत्पादन की भी चर्चा की। यद्यपि भारत समृद्ध था, लेकिन कठोर कर प्रणाली और सामाजिक असमानताओं के कारण अर्थव्यवस्था पर कुछ नकारात्मक प्रभाव भी देखे गए। साथ ही, महमूद गजनवी जैसे विदेशी आक्रमणकारियों द्वारा मंदिरों और खजानों की लूट ने अर्थव्यवस्था को अस्थायी झटके दिए। मध्यकालीन भारत की अर्थव्यवस्था अत्यंत विविध और जटिल थी, जिसमें विभिन्न क्षेत्रों, समुदायों और आर्थिक गतिविधियों का मिश्रण था। मध्यकालीन काल में विकसित कई आर्थिक संरचनाएं और प्रथाएं, जैसे भूमि स्वामित्व प्रणाली, शिल्प उत्पादन और व्यापार नेटवर्क, आज भी भारतीय अर्थव्यवस्था को प्रभावित करते हैं। इस काल का अध्ययन करके हम वर्तमान आर्थिक मुद्दों की जड़ों को समझ सकते हैं और भविष्य के लिए बेहतर नीतियां बना सकते हैं। इस शोध पत्र में, अल्बरूनी और उनके समकालीन लेखकों के दृष्टिकोण के आधार पर मध्यकालीन भारत की आर्थिक स्थिति का विश्लेषण किया गया है। जिससे यह समझने में सहायता मिलेगी कि 11वीं शताब्दी में भारत किस प्रकार एक संपन्न और व्यापारिक दृष्टि से सशक्त राष्ट्र था।

अल्बरूनी के अनुसार भारत की आर्थिक विशेषताएँ :

अलबरूनी जो 11वीं शताब्दी में मध्य एशिया से भारत आए थे। उन्होंने अपनी पुस्तक "किताब–उल–हिन्द" में भारतीय समाज, संस्कृति और अर्थव्यवस्था का विस्तृत विवरण दिया है। अल्बरूनी के अनुसार, मध्यकालीन भारत की अर्थव्यवस्था निम्नलिखित विशेषताओं वाली थी–

1. **समृद्ध और विविधता** – अल्बरूनी ने भारत को एक समृद्ध और उपजाऊ देश बताया है जहाँ विभिन्न प्रकार की फसलें और फल उगाए जाते थे। उन्होंने भारत की विविध भौगोलिक स्थितियों, जैसे पहाड़, मैदान, नदियाँ और समुद्र का भी उल्लेख किया है, जो अर्थव्यवस्था को समृद्ध बनाने में मददगार थीं।
2. **कृषि प्रधान** – मध्यकालीन भारत की अर्थव्यवस्था का मुख्य आधार कृषि थी। अल्बरूनी ने उल्लेख किया है कि भारत की उपजाऊ भूमि पर विभिन्न प्रकार की फसलें उगाई जाती थीं। प्रमुख फसलों में गेहूँ, चावल, जौ, गन्ना, दालें और मसाले शामिल थे। सिंचाई के लिए नहरों, कुओं और तालाबों का उपयोग किया जाता था। किसानों से भू–राजस्व लिया जाता था, जो आमतौर पर उपज के एक हिस्से के रूप में लिया जाता था। भूमि पर कृषकों का अधिकार सीमित था और कई क्षेत्रों में सामंती व्यवस्था प्रभावी थी। कृषि उत्पादन का एक बड़ा हिस्सा घरेलू खपत के लिए होता था, लेकिन अतिरिक्त उत्पादन को स्थानीय और अंतर्राष्ट्रीय व्यापार के लिए उपयोग किया जाता था।
3. **शिल्प और उद्योग** – अल्बरूनी ने भारत में विभिन्न प्रकार के शिल्प और उद्योगों का भी उल्लेख किया है, जैसे कपड़ा उत्पादन, धातु शिल्प, आभूषण निर्माण, चीनी मिट्टी के बर्तन आदि। इस काल में भारत अपने बारीक सूती और रेशमी वस्त्रों के लिए प्रसिद्ध था। देश में लोहे, तांबे, कांसे और स्वर्ण से बनी वस्तुएँ बनाई जाती थीं। इसके अलावा मंदिरों और महलों के निर्माण में कुशल कारीगरों की भूमिका थी। हालांकि शिल्पकारों और दस्तकारों की स्थिति मध्यम थी, लेकिन वे व्यापारियों पर निर्भर थे, जो उनके उत्पादों का विपणन करते थे।
4. **व्यापार और वाणिज्य** – अल्बरूनी के अनुसार, भारत का अंतर्राष्ट्रीय व्यापार अच्छी तरह से विकसित था। भारत का व्यापारिक नेटवर्क व्यापक था, जिसमें आंतरिक और अंतर्राष्ट्रीय व्यापार दोनों महत्वपूर्ण थे। आंतरिक व्यापार के रूप में देश में अनेक स्थानीय हाट, बाजार और नगरों में व्यापारिक गतिविधियाँ होती थीं। व्यापारिक मार्गों के माध्यम से माल एक स्थान से दूसरे स्थान तक ले जाया जाता था। इसके अतिरिक्त अंतर्राष्ट्रीय व्यापार को देखें तो भारतीय व्यापारी अरब, फारस, चीन और दक्षिण–पूर्व एशिया के देशों के साथ व्यापार करते थे। मसाले, कपड़ा, रेशम, हाथी दांत, कीमती पत्थर आदि का निर्यात किया जाता था।

5. **मुद्रा प्रणाली** – अल्बरूनी ने भारत में प्रचलित मुद्रा प्रणाली का भी वर्णन किया है। अल्बरूनी के समय में भारत में स्वर्ण, रजत और तांबे के सिक्कों का प्रचलन था। प्रमुख सिक्कों में दीनार, तंका और द्रम्म शामिल थे। कुछ क्षेत्रों में वस्तु विनिमय प्रणाली भी प्रचलित थी, विशेष रूप से ग्रामीण क्षेत्रों में। राजकीय कर और व्यापारिक लेन–देन के लिए सिक्कों का उपयोग किया जाता था भारत की अर्थव्यवस्था समृद्ध थी, लेकिन कुछ स्थानों पर कराधान प्रणाली कठोर थी।
6. **सामाजिक और आर्थिक असमानता** – अलबरूनी ने भारतीय समाज में व्याप्त सामाजिक और आर्थिक असमानता का भी उल्लेख किया है। उन्होंने जाति प्रथा और इसके आर्थिक प्रभावों पर चर्चा की है।
7. **राज्य का हस्तक्षेप** – अल्बरूनी ने यह भी बताया है कि राज्य अर्थव्यवस्था में महत्वपूर्ण भूमिका निभाता था। राज्य कर वसूल करता था, सिंचाई व्यवस्था का निर्माण करता था और व्यापार को नियंत्रित करता था।

उक्त बिन्दुओं के आधार पर स्पष्ट होता है की अल्बरूनी के अनुसार, मध्यकालीन भारत की अर्थव्यवस्था समृद्ध और विविध थी, लेकिन सामाजिक और आर्थिक असमानता भी मौजूद थी।

अल्बरूनी के समकालीन अन्य प्रमुख विचारकों/लेखकों के अनुसार भारत की आर्थिक स्थिति :

अल्बरूनी (973–1048 ई.) के अलावा, मध्यकालीन भारत की आर्थिक स्थिति का उल्लेख अन्य अरब, फारसी और चीनी यात्रियों एवं इतिहासकारों ने भी किया है। इन विद्वानों ने भारत की कृषि, व्यापार, उद्योग, कर प्रणाली और आर्थिक असमानता के बारे में महत्वपूर्ण टिप्पणियाँ की हैं। इस संदर्भ में अल्बरूनी काल (11वीं सदी) के समकालीन एवं अन्य प्रमुख विचारकों ने भारत की अर्थव्यवस्था को कैसे देखा से संबन्धित विवरण निम्न प्रकार है–

- **अल–मसूदी (10वीं शताब्दी)** – अल–मसूदी एक प्रसिद्ध अरब यात्री और भूगोलवेत्ता थे। इनकी प्रमुख रचनाएँ "मुरूज अद–धहब वा मा'दन अल–जवाहर" (स्वर्ण चरागाह और रत्नों की खान) है। उन्होंने भारत को समृद्ध भूमि बताया और इसके व्यापक व्यापारिक संपर्कों की चर्चा की। उन्होंने कहा कि भारत मसालों, वस्त्रों और कीमती धातुओं का सबसे बड़ा निर्यातक था। उन्होंने भारतीय समाज की संपत्ति असमानता को भी रेखांकित किया, जहाँ व्यापारी और जमींदार समृद्ध थे, जबकि श्रमिक वर्ग अपेक्षाकृत कमजोर था।
- **सुलेमान (9वीं शताब्दी)** – यह भी अरब के महशूर विचारक रहे है। अपनी रचनाओं में उन्होंने भारत को व्यापारिक केंद्र बताया, विशेष रूप से गुजरात, बंगाल और दक्षिण भारत को महत्वपूर्ण व्यापारिक स्थल के रूप में वर्णित किया। उन्होंने भारतीय व्यापारियों की संपन्नता और उनकी अंतर्राष्ट्रीय पहुंच को नोट किया। उन्होंने यह भी लिखा कि भारतीय राजा विदेशी व्यापार पर कर लगाकर समृद्धि प्राप्त करते थे।

- **इब्न हौकल (10वीं शताब्दी)** – इब्न हौकल एक प्रसिद्ध अरबी भूगोलवेत्ता, यात्री और लेखक थे। वे बगदाद (आधुनिक इराक) के निवासी थे। इन्होने अपने ग्रंथ "सूरत अल–अरद" (भूमि का विवरण) में विभिन्न देशों, उनकी आर्थिक, सामाजिक और भौगोलिक विशेषताओं का विस्तृत वर्णन किया। जिसके अंतर्गत उन्होंने भारत के व्यापारिक केंद्रों जैसे गुजरात, कोंकण और बंगाल का उल्लेख किया। अपने लेखों में कई स्थान पर इन्होने तत्कालीन भारतीय वस्त्र उद्योग और धातु कारीगरी की प्रशंसा की। उन्होंने व्यापार मार्गों के महत्व को रेखांकित किया और भारतीय व्यापारियों की वैश्विक उपस्थिति की चर्चा भी की है।
- **मार्को पोलो (13वीं शताब्दी)** – मार्को पोलो वेनिस, इटली के निवासी थे। वे 13वीं शताब्दी के एक प्रसिद्ध इतालवी व्यापारी और खोजकर्ता थे जिन्होंने एशिया की यात्रा की और अपने अनुभवों का विस्तृत विवरण लिखा। उनकी पुस्तक "द ट्रैवेल्स ऑफ मार्को पोलो" ने यूरोपीय लोगों को पूर्वी दुनिया, विशेष रूप से चीन के बारे में जानकारी दी। परंतु भारत के संदर्भ में भी इनके व्यापक विश्लेषण मिलते है। हालाँकि यह अल्बरूनी के बाद का काल है, लेकिन मार्को पोलो ने भारतीय अर्थव्यवस्था की कुछ महत्वपूर्ण विशेषताएँ निम्नलिखित थी–
    - भारत में व्यापारिक संपन्नता और वस्त्र उद्योग का विकास।
    - भारतीय सोने, चाँदी और बहुमूल्य रत्नों का विशाल भंडार।
    - भारतीय मसालों की वैश्विक मांग और व्यापार मार्गों की महत्वपूर्ण भूमिका।
- **नासिरुद्दीन तुसी (13वीं शताब्दी)** – यह 13वीं शताब्दी के एक प्रसिद्ध फारसी बहुश्रुत थे। वह एक खगोलशास्त्री, जीवविज्ञानी, रसायनज्ञ, गणितज्ञ, दार्शनिक, चिकित्सक, भौतिक विज्ञानी, धर्मशास्त्री, लेखक और मरागा वेधशाला के संस्थापक थे। उनका जन्म 18 फरवरी 1201 को, तूस, खुरासान, ख्वारज़िमद साम्राज्य (वर्तमान ईरान) में हुआ था। अपने लेखों तथा रचनाओं मे उन्होंने भारतीय गणित, खगोलशास्त्र और वाणिज्यिक पद्धतियों पर चर्चा करते हुए भारतीय मुद्रा प्रणाली और व्यापारिक संतुलन की महत्ता बताई है। इसके साथ ही उन्होंने भारतीय व्यापारियों को धन–सम्पन्न और व्यावसायिक रूप से कुशल बताया है।

समाकलित दृष्टिकोण :

अल्बरूनी और अन्य समकालीन यात्रियों तथा इतिहासकारों के अनुसार, 11वीं सदी का भारत आर्थिक रूप से मजबूत और व्यापारिक गतिविधियों में अग्रणी था। यदि अल्बरूनी एवं उनके समकालीन उक्त विद्वानों के भारत से संबन्धित विचारो का समाकलन किया जाये तो निष्कर्ष के आधार पर उस समय के भारत की निम्नलिखित विशेषताएँ सामने आती है–

- उस समय भारत की अर्थव्यवस्था मुख्यतः कृषि आधारित थी एवं देश में फसल उत्पादन और सिंचाई प्रणाली उन्नत थी। गेहूँ, चावल, ज्वार, बाजरा, दालें जैसी खाद्य फसलों के साथ–साथ कपास, गन्ना, नील जैसी नकदी फसलों की खेती प्रमुख थी। सिंचाई के लिए कुओं, तालाबों और नहरों का उपयोग किया जाता था।
- देश में व्यापक व्यापार नेटवर्क विस्तारित था, उस समय भारत का व्यापार अरब, फारस, चीन और यूरोप तक फैला था।
- उस समय के भारत में उद्योग और शिल्पकला विकसित अवस्था में थी तथा वस्त्र, धातु, और हस्तशिल्प का व्यापक उत्पादन होता था। कपड़ा उत्पादन, धातु शिल्प, चीनी मिट्टी के बर्तन, आभूषण निर्माण जैसे उद्योग विकसित हुए।
- देश में मजबूत मुद्रा प्रणाली का अनुमान इस तथ्य से लगाया जा सकता है की उस समय सोने और चाँदी के सिक्के प्रचलन में थे।
- सुदृढ़ कर प्रणाली प्रचालन मे थी एवं राजस्व संग्रह की सुव्यवस्थित प्रणाली थी।
- देश विदेशी आक्रमणों से प्रभावित था प्रमुख रूप से महमूद गजनवी के आक्रमणों से आर्थिक स्थिरता को आघात पहुँचा, लेकिन भारत ने अपनी समृद्धि बरकरार रखी।

निष्कर्ष :

उक्त विश्लेषण के पश्चात निष्कर्ष के आधार पर यह कहा जा सकता है की अल्बरूनी और अन्य समकालीन यात्रियों तथा इतिहासकारों के अनुसार, 11वीं सदी का भारत आर्थिक रूप से मजबूत और व्यापारिक गतिविधियों में अग्रणी था। अल्बरूनी और अन्य लेखकों की टिप्पणियाँ यह दर्शाती हैं कि मध्यकालीन भारत, विशेष रूप से 11वीं शताब्दी, में एक संगठित, समृद्ध और व्यापारिक रूप से उन्नत अर्थव्यवस्था थी, जिसने वैश्विक व्यापार और सांस्कृतिक आदान–प्रदान में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई। इनके अध्ययन के अनुसार, 11वीं शताब्दी का भारत कृषि, व्यापार और शिल्पकला में उन्नत था। भारतीय अर्थव्यवस्था स्वावलंबी थी, लेकिन सामाजिक असमानताएँ और कठोर कर प्रणाली आम जनता के लिए चुनौतीपूर्ण थीं। भारत का व्यापारिक और सांस्कृतिक प्रभाव व्यापक था, जिससे यह वैश्विक व्यापार मार्गों का एक महत्वपूर्ण केंद्र बना। अल्बरूनी की टिप्पणियाँ यह संकेत देती हैं कि मध्यकालीन भारत आर्थिक रूप से संपन्न था, लेकिन बाहरी आक्रमणों और आंतरिक सामाजिक विभाजन के

कारण यह दीर्घकालिक रूप से प्रभावित हुआ। अतः स्पष्ट है की अल्बरूनी एवं समकालीन विचारकों का भारत संबंधी आर्थिक अध्ययन न केवल मध्यकालीन भारत की आर्थिक शक्ति को दर्शाता है, बल्कि उस समय के सामाजिक–राजनीतिक परिवर्तनों का भी विश्लेषण करता है।

References :

1. Ahmad, S. (1964). *Al-Biruni's Contribution to the Study of Indian Society*. Islamic Culture, 38(2), 93-108.
2. Al-Biruni. (1910). *Alberuni's India (Vol. 1 & 2, E. C. Sachau, Trans.)*. Kegan Paul, Trench, Trübner & Co. (Original work published in 1030).
3. Al-Masudi. (1989). *The Meadows of Gold and Mines of Gems (Pellat, C., Trans.)*. Routledge.
4. Chattopadhyaya, B. D. (1990). *Aspects of Rural Settlements and Rural Society in Early Medieval India*. Primus Books.
5. Gopal, R. (1993). *Economic Life in Medieval India (A.D. 900-1300)*. Motilal Banarsidass.
6. Habib, I. (1995). *Essays in Indian History: Towards a Marxist Perception*. Tulika Books.
7. Hawqal, I. (1938). *Kitab Surat al-Ard (The Book of the Earth)*. Leiden: Brill.
8. Hourani, G. F. (1995). *Arab Seafaring in the Indian Ocean in Ancient and Early Medieval Times*. Princeton University Press.
9. Levi, S. (2007). *Indian Trade and Economy in the Age of the Islamic Expansion*. Oxford University Press.
10. Mukherjee, B. N. (1989). *Arab Geographers on India*. Munshiram Manoharlal Publishers.
11. Ray, H. P. (2003). *The Archaeology of Seafaring in Ancient South Asia*. Cambridge University Press.
12. Saletore, B. A. (1974). *Medieval Indian Culture and Economy*. Abhinav Publications.
13. Scharfe, H. (2002). *Education in Ancient India*. Brill.
14. Sen, S. N. (1999). *Economic History of Early India*. Macmillan India.
15. Tripathi, R. S. (1960). *History of Ancient India*. Motilal Banarsidass.
16. Verma, H. C. (1986). *Medieval Trade and Industry in India (A.D. 900-1700)*. Concept Publishing Company.
17. Wink, A. (2002). *Al-Hind: The Making of the Indo-Islamic World, Vol. 1*. Brill.

IJARASEM

INTERNATIONAL STANDARD SERIAL NUMBER INDIA

निस्केयर NISCAIR

International Journal of Advanced Research in Arts, Science, Engineering & Management (IJARASEM)

| Mobile No: +91-9940572462 | Whatsapp: +91-9940572462 | ijarasem@gmail.com |